# रामकथाओं में भारतीय संस्कृति

संपादक : सुमन रानी

13. भारतीय समाज और श्रीराम का चरित्र 94
**धीरज**
14. रामकथा: धार्मिक, सामाजिक और पारिवारिकता से ओतप्रोत चरित्र 100
**सुप्रिया प्रसाद**
15. भारतीय समाज और राम का चरित्र 106
**अजीत कुमार सिंह**
16. भारतीय समाज और राम का चरित्र 112
**अभिषेक कुमार यादव**
17. तुलसीदास और मुस्लिम संस्कृति 120
**प्रदीप कुमार तिवारी**
18. भारतीय समाज में रामचरित की महानता 124
**प्रा. चौधरी अनिता विश्वानाथ**
19. रामायण में भारतीय सामाजिक-व्यवस्था 129
**अनिता कौशिक**
20. श्रीराम : भारतीय संस्कृति के आराध्य 136
**डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा**
21. भारतीय साहित्य में रामकाव्य-परंपरा 142
**ज्योति कुशवाहा**
22. वाल्मीकि रामायण में वर्णित शिक्षा-व्यवस्था 148
**डॉ. राजेश कुमार**
23. श्रीरामचरितमानस में चित्रित भारतीय संस्कृति 165
**डॉ. विदुषी शर्मा**
24. भारतीय समाज और राम का चरित्र 173
**जय सिंह यादव**
25. वाल्मीकि रामायण और तुलसीदास 178
**रवि कुमार**

# भारतीय समाज में रामचरित की महानता

**प्रा. चौधरी अनिता विश्वानाथ**
गोविंदलाल कन्हैयालाल जोशी, (रात्रीचे) वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर.
choudharyanita20101989@gmail.com

रामायण हिंदू संस्कृति का परिचायक एक अपूर्व ग्रंथ है। यद्यपि रामायण की जो पुस्तकें आजकल हमको मिलती हैं वे दो-ढाई हजार वर्ष से पुरानी नहीं हैं तो भी उनमें प्राचीन हिंदू समाज का मान-मर्यादा और विशेषताओं का अच्छा परिचय मिलता है।

भारतीय समाज का सबसे प्राचीन चित्र ऋग्वेद में मिलता है। उसमें आर्य और अनार्य के संघर्ष की कथाएँ भरी पड़ी हैं। प्रत्यक्ष और अलंकारिक भाषा में उसमें अनेक युद्धों का वर्णन आया है। ब्राह्मण ग्रंथों के निर्माण काल तक आर्य और अनार्य पर आर्य सभ्यता की छाप पूरी तरह पड़ चुकी थी, पर दक्षिणी भारत अभी तक अछूता था। वहाँ बहुत दूर-दूर पर आर्यों ने अपने उपनिवेश स्थापित किए थे, पर उनकी शक्ति अधिक नही थी, और उनको वहाँ के मूल निवासियों तथा विदेशियों के विरोध का मुकाबला भी करना पड़ रहा था। आर्य जाति के बड़े नेता और संचालक स्वभावतः ही अपनी संस्कृति को दक्षिण में फैलाने के लिए व्याकुल थे और यही राम-रावण युद्ध का मूल था।

राजा दशरथ के राज्य काल में उत्तर भारत में राष्ट्रीयता लुप्तप्राय थी। वहाँ की राजनीतिक स्थिती बहुत डाँवाडोल थी। कोई ऐसा शक्तिशाली राजा नहीं था जो सब छोटे-छोटे बिखरे हुए राज्य को एक सूत्र में ग्रंथित करके एक संगठित राज्य का रूप देता। ब्राह्मणों ने भी राज्य की लालसा उत्पन्न हो गई थी और वे परशुराम जी के नेतृत्व में जगह जगह क्षत्रियों का संहार करके राज्याधिकार पाने में सफल हुए थे। उस समय उत्तर भारत में आर्यों के दो ही राज्य ऐसे थे जो कुछ शक्ति रखते थे एक कोसल और दूसरा मिथिला। जिस प्रकार मुसलमानों के भारत आक्रमण काल में, हिंदू धर्म और हिंदू संस्कृति का ह्रास देखते हुए भी, आपसे में मनोमालिन्य और स्वार्थ के कारण हिंदू नरेश एक सूत्र में नहीं बँध सके, उसी



प्रकार एक और परशुराम की संहार भावना और दूसरी और अनाया के उपद्रवों को देखते हुए भी कोसल और मिथिला के राज्य एक सूत्र में न बाँध सके थे। इसी मनोमालिन्य का परिणाम था की सीता स्वयंवर के लिए कोसल नरेश को संभवतः निमंत्रण नहीं मिला था।

विश्वमित्र जन्मतः क्षत्री थे और अपने समय के बहुत दूरदर्शी और अनुभवी राजनीतिज्ञ थे। वे समझते थे कि राष्ट्र का वास्तविक हित तभी संभव है जब ब्रह्मबल और क्षात्रबल का उचित रीति से समन्वय किया जा सकेगा। अतएव वे ऐसे ही सुअवसर की खोज में थे। उन्होंने ब्राह्मबल के अधिष्ठाता वसिष्ठ और क्षात्र बल से मंडित श्रीराम में ऐसे समन्वय का आभास पाया। सीता स्वयंवर में मिथिला और कोसल को एक सूत्र में बाँधने का सुयोग दिया। विश्वामित्र ने इस सुयोग से लाभ उठाया। वे राक्षसों अनार्यों से यज्ञ की रक्षा करने के नाम पर राम लक्षण को अपने साथ लिवा ले गए और ठीक मौके पर मिथिलापुर जा पहुँचे।

साम्राज्यवादी और कूटनीतिज्ञ रावण भी बहुत समय से दक्षिण भारत को अपने साम्राज्य का अंग बनाने की चेष्टा कर रहा था। भारत के आर्य राजाओं की आपसी फुट और एकता की कमी को देखकर इस समय वह भी अपनी चाल चल रहा था। उसने उन अनार्यों को जो अपनी कट्टरता के कारण आई में घुलने मिलने को तैयार न हुये थे और गहन जंगलों तथा पहाड़ों में भागकर अपनी जातियता की रक्षा कर रहे थे, आर्थी के विरुद्ध भड़का रहा था कि वे ऋषियों द्वारा संचालित शिक्षा संस्थाओं, तपोवनों में तोड़-फोड़ की कार्यवाहियाँ जारी रखे। जिस प्रकारआज कल भारत विभाजन हो जाने पर भी पाकिस्तानी मुसलमान भारतीय सीमा के निकट रहने वाले भारतीयों पर आक्रमण किया करते हैं, उसी प्रकार अनार्यों के छापामार भी तपोवन वासी ऋषियों और ब्रह्मचारी छात्रों को तरह तरह से सताया करते थे। विश्वामित्र ने राम को नये-नये अस्त्र-शस्त्रों की शिक्षा दी। राम भी अनार्यों की नेता ताड़का को मारने और उसके दल को नष्ट करने में सफल हुये। उसके बाद राम ने सुबाहू तथा मारीच के नेतृत्व में छापा मारने वाले दूसरे दल का विध्वंस किया और मारीच को सुदूर दक्षिण की ओर खदेड़ दिया।

इधर विश्वामित्र की कूटनीति के फलस्वरूप, निमंत्रित न होते हुए भी, राम ने सीता स्वयंवर में जाकर अपना प्रबल पराक्रम दिखलाया, अत्यंत कठोर शिव धनुष को तोड़कर अदभुत शारीरिक शक्ति का परिचय दिया। इस प्रकार सीता के विवाह होने पर दो बड़े राजकुल एकता के सूत्र में बँध गए। इनके परस्पर संबद्ध हो जाने से उत्तर भारत में आर्य संगठन का श्रीगणेश हुआ।

लंकापति रावण भी, जो भौतिक विज्ञान में पारंगत होने के कारण वायु विमान तैयार करा चुका था, मिथिलापति को स्नेह सूत्र में बाँधने के अभिप्राय से सीता

स्वयंवर में आया था। किंतु जब उसने देखा कि दूसरा पराक्रमी अनार्य योद्धा वाणासुर भी उसी उद्देश्य से आया है, तो उसने सोचा कि आर्यो के आगे अनार्य नरेशों का इस प्रकार आपस में लडकर शक्तिहिन बन जाना उचित नहीं। अतएव यह स्वयं भी हट ले गया और वाणासुर को भी वहाँ से हटा ले गया।

क्षत्रियों की यह बढ़ती हुई शक्ति परशुराम को सहन न हई। वे राम को नीचा दिखाने के लिए कटिबद्ध हो गए। किंतु जब उन्हें राम की वीरता और प्रतिभा का परिचय भली-भाँति मिल गया और उन्होंने जान लिया कि आर्य राष्ट्र का कल्याण राम द्वारा ही हो सकता है, जब वे अपनी शक्ति और गौरव का अवसान काल समझकर राजनीतिक क्षेत्र से एकबारगी अलग होकर, जंगल में तप करने चले गए।

इन घटनाओं के फलस्वरूप विश्वमित्र ने उत्तर भारत की स्थिति को सर्वथा निरापद अनुभव किया और इस अवसर को दक्षिण में आर्य सभ्यता तथा आर्य संस्कृति फैलाने के लिए विशेष अनुकूल समझा। राम के वन गमन की घटना का कारण अनेक अलोचकों के घरेलू राजनैतिक षडयंत्र बतलाया है, पर दूसरी श्रेणी के आलोचकों को उसमें कोई गहरा उद्देश्य जान पड़ता है। श्री राम की योग्यता और शक्ति को देखकर आर्य जाती के प्रधान नेताओं को यह विश्वास हो चुका था कि वे ही दक्षिण भारत को आर्य सभ्यता का अनुयायी बना सकते है। इसलिए उन सबने मिलकर जिसमें पंजाब तक के आर्य नेताओं, ऋषि तथा मुनियों का भी हाथ था, इस योजना को कार्यान्वित कराया। यह इससे भी ज्ञात होता है कि, भारद्वाज ऋषि ने भी भारत से कहा था कि, "रामचंद्र के वन जाने का अंत बड़ा सुखकारी होगा।"

राम स्वभाव से ही उदार और सहृदय थे अतएव वनवासी होकर उन्होंने सब से बडा कार्य यही किया कि वे आए ऋषियों और अनार्य हरिजनों के बीच संबंध स्थापित कराने में समर्थ हुआ। नीचातिनीच स्त्री पुरुषों ने भी उनकी आत्मीयता के वशी होकर उनको अपना हितैषी मान लिया। उन्होंने 13 वर्ष तक सुदूर दक्षिण में गोदावरी के तट पर निवास किया और अपनी उदारता, वीरता एवं संस्कृति से किरात, निषाद, वानर, भालू, गिद्ध आदि अनेकानेक अनार्य जानियो पर अपने सदव्यवहार का अमिट प्रभाव डाला। परिणाम स्वरूप वे उनकी और इस प्रकार खींचे गए कि चौदह वर्ष के वनवास में सिर्फ तुम्हीं अनार्य राजाओं और नेताओं की सहायता से उन्होंने महापराक्रमी बली और अनार्य कुलसम्राट रावण को पराजित किया, और आर्य सभ्यता की पताका सदा के लिए दक्षिण भारत में गाड़ दी।

अनार्य शिरोमणि महाबाहू रावण के पराजय के बिना ऋषि मुनियों और गुरुकुलों की रक्षा संभव नहीं थी। साथ ही आर्य सभ्यता तथा आर्य संस्कृति का



कायम रखना भी असंभव था। अत एव अयोध्या के निकट चित्रकूट के रमणीक जंगल निवास करने के बदले रामके सुदूर दक्षिण में गोदावरी के तट पर निवास किया। इस स्थान के निवास के कारण उनका संपर्क ऋषि अगत्य से हो गया। अगत्य जी दक्षिण प्रवासी आर्य लोगों के सबसे बडे नेता और विज्ञान के जानकर थे उन्होंने राम को रावण आदि अनार्य राजाओं के कुचकों से परिचित कराया और उनका सामना करने के अनेक नये-नये अस्त्र भी दिए। ताडका सुबाहु आदि के वध के कारण रावण भी राम की वीरता से परिचित था। राम के पंचवटी निवास और उनके प्रति अनार्यों की बढ़ती हुई श्रद्धा को वह अपने मार्ग में कटक समझने लगा था भविष्य के लिए शंकित हो गया। उसने राम की गतिविधि का पता लगाने के लिए अपने जासूस भेजे। उनमें शूर्पनखा प्रमुख थी। वह रावण की बहिन लगती थी और प्रसिद्ध सुंदरी थी। प्रथम योरोपीय महायुद्ध की जासूस महिला माताहरी की तरह वह अपने सौदर्य का अमोघ अस्त्र राम और लक्ष्मण पर चलना चाहती थी किंतू सफल न हो सकी। पहले वो राम के पास गई पर वे उसके चक्कर में न आएँ। हताश होकर वह लक्ष्मण के पास गई, पर वे भी उसके फंदे मे न फँसे। उसका उद्देश्य समझकर और उसे बहुत खतरनाक जानकर उन्होंने उसकी नाक काट दी।

रावण को जब अपनी बहिन की दुर्दशा का समाचार मिला तो एक और अपनी मर्यादा और प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए तथा दूसरी और राम की शक्ति की जाँच करने के लिए उसने पराक्रमी खर-दूषण ने अनार्यों का एक सुदृढ़ राज वर्तमान बंबई इलाके में समुद्र के किनारे स्थापित कर रखा था। राम ने अपने सहकारियों की सहायता से उन सबको अनायास नष्ट कर डाला। तब रावण को बड़ी घबराहट हुई। वह पंचवटी आकर उनसे युद्ध करना नहीं चाहता था। क्योंकि इसमें आवागमन की बड़ी कठिनाइयाँ थी। वह चाहता था कि ये लंका में ही आकर उससे लड़ें। इसी उद्देश्य से वह राम-लक्ष्मण की अनुपस्थिति में आकर सीता को हर कर ले गया।

राम सीता की खोज में लक्ष्मण के साथ निकल पड़े। वे सीता की करुण कहानी कहकर गिद्ध, बानर आदि जातियों को अपने प्रेमबंधन में बाँधने में सफल हुए। राम का उद्देश्य साम्राज्य विस्तार नहीं था। किंतू दक्षिण भारत में आर्या की स्थिति को निरापद बनाया तथा आर्य संस्कृति का फैलना ही उनका लक्ष्य था। चतूर राजनीतिज्ञ होने के कारण ये बात उन्होंने सुग्रीव से मित्रता करके बालि का वध किया तो राज्य और धन से निर्लिप्त रहकर जहाँ एक ओर सुग्रीव को राज्य सौंपा वहाँ बालि तनय अंगद को युवराज बनाकर दोनो दलों को एक साथ प्रेम पाश में बाँधा ।इसी का फल था कि अनेक अनार्य राजाओं ने अनार्यकुल भूषण

रावण को युद्ध में पराजित करने में राम की सहायता की।

बालि रावण का परम मित्र था। बालि को मारकर राम केवल अपने मार्ग कंटक ही दूर करने में समर्थ न हुये, किंतु वानर जाति की सम्मिलित शक्ति की सहायता पाने में भी सफल हुये। सुग्रीव की सहायता से राम ने अनेक दुतों को लंका का सुगम मार्ग और रावण की सैनिक स्थिति का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के उददेश से लंका भेजा इसी बीच में आसपास की अनेक अनार्य जातियों से मेल मिलाप कर उन्होंने बहुत बड़ी सेना का संगठन भी कर दिया।

लंका पहुँचने पर उन्होंने रावण की रणनीति का भेद जानने के लिए, उसके कुछ साथियों को फोड़ने का प्रयत्न किया। इसमें वे सफल हुये। और रावण के भाई विभीषण को राज्याधिकार दिलाने का वचन देकर अपना सहायक बना लिया। अनेक विद्वानों का मत है की, रावण के बुरे व्यवहार से संतुष्ट होकर विभीषण स्वयं राम की शरण में आया था। कुछ भी हो यदि राम को विभीषण द्वारा रावण के गुप्त अस्त्र-शस्त्रों का भेद मालूम न होता तो लंका को जीत सकना कदाचित ही संभव होता।

रावण जैसे वैभवशाली सम्राट पर विजय पाकर भी राम ने अपना कोई स्वार्थ नहीं साधा। जो कुछ माल, खजाना, अमुल्य वस्त्र, आभुषण, रत्न आदि लंका से मिले व सब अनार्य सिपॉहियों को ही बाँट दिए गए। उनके इस निस्वार्थ भाव का परिणाम हुआ की अनार्यों की श्रद्धा और भक्ति उनके प्रति दृढ़ और स्थायी हो गई तथा उन पर आर्य सभ्यता की अमिट छाप पड़ गई वे लंका का राज विभीषण को सौंप कर सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या वासियों और अनार्य के प्रतिनिधि के रूप में हनुमान को राजदूत की तरह अपनी सभा में ऐसे प्रेम और सम्मान के साथ रखा की वे उनके दासानुदास बन गए।

राम सर्वगुण संपन्न, श्रेष्ठ, धर्मशील और नीतिज थे। दक्षिण भारत की यह सांस्कतिक विजय उनकी अक्षय कीर्ति थी। इसी कारण अगामी युग की जनता उनको अवतार मानकर पूजने लगी।

## संदर्भ


1. डॉ.पी.बी. वर्तक, 'वास्तव रामायण' का चतुर्थ संस्करण, 1993।
2. इतिहास का उपहास 'राम की जन्मतिथि एवं जन्म की भ्रामक व्याख्या को निराकरण विनय झा, अखिल भारतीय विद्वत परिषद, वाराणसी, संस्करण, 2015।
3. इतिहास का उपहास, पुर्ववत पृ. 30।
4. इतिहास का उपहास पूर्ववत, पृ. 29।
5. वही, पृ. 37।

# रामकथाओं में भारतीय संस्कृति


**सुमन रानी**

**शिक्षा** : एम.ए. राजनीति- शास्त्र (कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र), एम.ए. हिन्दी (कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र), एम.एड्. (कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र), एम.फिल.हिन्दी (द.भा. हि.प्रचार सभा मद्रास)

**शोध कार्य** : मन्नू भंडारी के उपन्यासों मे चित्रित सामाज, प्रिय प्रवास और वैदेही वनवास मे नारी, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों मे 75-80 शोध- पत्र प्रस्तुति, सम्मान।

**पुरस्कार व उपाधि** : हिन्दी रत्न उपाधि, विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर (बिहार) • साहित्योत्थान उपाधि, हिमालय और हिन्दुस्तान, देहरादून (उत्तराखंड) • शिक्षा रत्न उपाधि, श्री गोविंद हिन्दी सेवा समिति, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) • कबीर सम्मान, साहित्यिक सांस्कृतिक कला संगम अकादमी, परियावाँ, प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश) • वीरांगना सावित्रीबाई फुले राष्ट्रीय सम्मान, भारतीय दलित साहित्य अकादमी, पंचशील आश्रम, झड़ौदा, बुराड़ी, दिल्ली • नारी गौरव सम्मान, उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, पटियाला, 'हिमाक्षरा' महाराष्ट्र तथा 'ड्रीम्ज ऑफ सोशल ट्रेड्ज' रजि (दासत) पंजाब • अंतरराष्ट्रीय शिक्षक गौरव सम्मान, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर एवं गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी, भिवानी • हिन्दी साहित्य रत्न सम्मान, उत्तर भारतीय हिन्दी साहित्य परिषद, देहरादून (उत्तराखंड) • हिन्दी गौरव सम्मान, हिन्दी सेवा अकादमी, देवघर (बिहार) • महार्षि दयानंद राजभाषा गौरव सम्मान, हरियाणा संस्कृत अकादमी, पंचकूला एवं गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी, भिवानी • समीक्षा सम्मान, राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना, उज्जैन (मध्य प्रदेश) • 'तुलसी सम्मान', तुलसी विद्यापीठ नयागांव (चित्रकूट) • संत शिरोमणि ब्रह्मानंद सरस्वती सम्मान, जगतगुरु स्वामी ब्रह्मानंद चौरिटेबल ट्रस्ट (रजि), ग्राम-चूहड़माजरा कैथल (हरियाणा) • हिन्दी सेवा सम्मान, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम' संस्कृति सेवा आयाम पंजी., लाड़वा, कुरुक्षेत्र।

**प्रकाशित पुस्तकें** : हरिऔध साहित्य के विविध आयाम, साहित्य संचय प्रकाशन, दिल्ली, समाज और किन्नर, साहित्य संचय, दिल्ली, हिन्दी साहित्य और स्त्री विमर्श, साहित्य संचय, दिल्ली,

**अप्रकाशित पुस्तकें** : हरिऔध के महाकाव्यों मे चित्रित नारी, मन्नू भंडारी कृत 'आपका बंटी' मे बाल मनोविज्ञान, 'एक इंच मुस्कान' मे त्रिकोणीय जीवन, 'महाभोज' मे राजनीति का यथार्थ चित्रण, प्रवासी साहित्य और साहित्यकार, समकालीनों की दृष्टि मे- डॉ. कमल सुनृत वाजपेयी, मेरा कबीर मेरे पत्र, प्रेमचन्द के किसान और आज के किसान की मनोदशा, मेरे शोध पत्र और रामकाव्यों मे राम का स्वरूप, विभिन्न भाषाओं के रामकाव्यों मे राम का स्वरूप।

**संप्रति** : सहायक प्रवक्ता, सेंट पॉल्स कॉलेज ऑफ एजूकेशन, नीमका, फरीदाबाद

**संपर्क** : sumanbhati808@gmail.com



साहित्य संचय

ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन

www.sahityasanchay.com
e-mail : sahityasanchay@gmail.com
Mob. : 9871418244, 9136175560

₹ 200

ISBN : 978-81-942948-9-4